दादा भगवान परिवार का
अक्टूबर - २०१८
शुल्क प्रति नकल : ₹ 20/-

अक्रम एक्सप्रेस

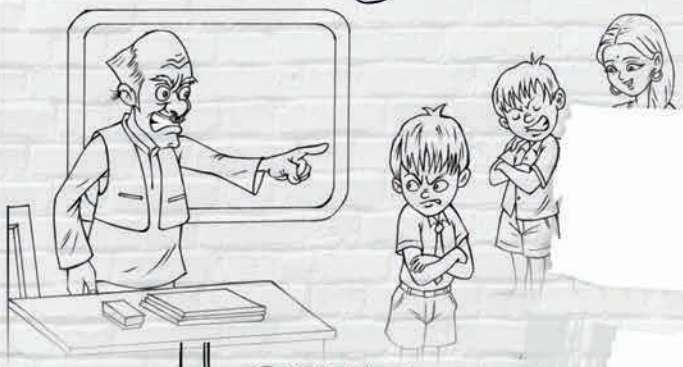

Invite your friend for JJ 111

फरियाद रहित जीवन

फरियाद रहित जीवन

संपादकीय

बालमित्रों,

फरियाद अर्थात् अपनी भाषा में कहें तो कम्प्लेन। इसने मुझे मारा, इसने मेरी पेन्सिल ले ली, मम्मी-पापा मुझे घूमने नहीं ले जाते, टीचर बहुत गुस्से वाले हैं आदि... अपनी फरियादों का अंत ही नहीं आता। कभी सोचा है कि क्या दुःख है, जो फरियादें करते रहते हैं।

फरियादें क्यों होती होंगी? कौन करवाता होगा? उनके परिणाम क्या? फरियादें बंद कैसे होंगी? इस अंक में इन सभी उलझनों के समाधान दिए गए हैं।

मित्रों, यदि आपको फरियाद रहित जीवन जीना है तो इस अंक को खास पढ़ना और तय करना कि मुझे रोज़ एक फरियाद में से मुक्त होना है। उसके लिए आपको यह अंक जरूर हेल्प करेगा।

-डिम्पल मेहता

अक्रम एक्सप्रेस

वर्ष : ६ अंक: ७
अखंड क्रमांक: ६७
अक्टूबर २०१८

संपर्कसूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

Editor : Dimple Mehta

Printer & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist-Gandhinagar.

© 2018, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :२०० रुपए
यू.एस.ए. :१५ डॉलर
यू.के. :१२ पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ८०० रुपए
यू.एस.ए. : ६० डॉलर
यू.के. : ५० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

ज्ञानी कहते हैं...

पूज्यश्री : फरियाद रहित जीवन होता ही नहीं है न! मम्मी मेरी पसंद का खाना नहीं बनाती, पापा मुझे मेरे पसंद की गेम नहीं लाकर देते। मेरा फ्रेन्ड मेरे साथ नहीं खेलता, आज अच्छी नींद नहीं आई, ऐसी कोई न कोई फरियाद रहती ही है।

ज़रा सा दुःख पड़ा कि फरियाद शुरू हो जाती है या फिर किसी बात में असंतोष रहता हो तो भी फरियाद शुरू हो जाती है। कम्पैरिज़न करके भी फरियाद होती है। स्पर्धा भी फरियाद करवाती है जैसे : उसे ज्यादा मिला, मुझे नहीं मिला।

हमारे ही दोष हमें उल्टा दिखाते हैं। कषाय हमें उल्टा दिखाते हैं इसलिए प्रॉब्लम शुरू हो जाते हैं। फिर फरियाद रहती है।

प्रश्नकर्ता : कोई कारण नहीं हो फिर भी फरियाद करने की आदत पड़ गई हो ऐसा लगता है।

पूज्यश्री : हाँ, बिना कारण। कारण नहीं है मतलब असंतोष की भूख। हमें कुछ दुःख है, कुछ चाहिए और नहीं मिला इसलिए फरियाद शुरू हो जाती है। जिसे किसी का कुछ नहीं चाहिए, उसे किसी के लिए कोई फरियाद नहीं रहती। यह तो कुछ चाहिए, नियत खराब है, इसलिए फिर क्लेश होता है। वह कहता है कि मैं नहीं दूँगा और यह कहता है कि मुझे चाहिए, उसका झगड़ा है। यदि वह कहता है कि मैं नहीं दूँगा और यह कहता है कि मुझे कुछ चाहिए ही नहीं, तो फिर फरियाद ही नहीं है। शुद्धात्मा के अनुभव सिवाय कुछ चाहिए ही नहीं ऐसा ध्येय पकड़ना है और जो कुछ भी चाहिए उसका भागाकार करते जाएँगे तो छूटते जाएँगे।

प्रश्नकर्ता : "फरियाद करने वाला ही गुनहगार है," वह कैसे?

पूज्यश्री : बुद्धि बताती है कि उसे ज्यादा मिला और मुझे कम। उसे देते हैं और मुझे नहीं देते। फरियाद कब कहलाएगी जब ऐसा लगे कि उसे सीधा करना है। खुद सामने वाले को सीधा नहीं कर सकता इसलिए उसकी फरियाद करता है। फिर न्याय मिले इसलिए न्यायाधीश के पास जाता है और ऐसा कहता है कि उसे सुधारो। उसने मेरे साथ ऐसा किया।

हमें उसे नहीं सुधारना। अपनी नासमझी निकालनी है। अपने दोषों को साफ करना है। उसका पॉइन्ट ऑफ व्यू समझकर, अपने दोषों को साफ करना है। हमने एडजस्टमेन्ट बदला तो उसके साथ सॉल्यूशन आ गया। फिर हमें कोई फरियाद भी नहीं रहेगी और उसके लिए दुःख भी नहीं रहेगा।

यह तो नई

सहज मिला तो दूध बराबर

सहज मिला सो दूध बराबर, माँग लिया सो पानी, खींच लिया सो रक्त बराबर। अत : सहज रूप से मिले उसका उपयोग करना है। वर्ना कुछ चाहिए ही नहीं तो फरियाद नहीं रहेगी।

सुखी हो ही जाता है

जिसका जीवन फरियाद रहित होता है वह तो सुखी हो ही जाता है। सचमुच तो वह सुखी होने के लिए ही फरियाद करता है। और फिर वही फरियाद उसे दुःख देती है।

ही बात है !

बुद्धि बंद हो गई

बुद्धि है वहाँ तक फरियाद है। जिसकी बुद्धि बंद हो गई उसकी फरियाद अपने आप बंद हो जाती है।

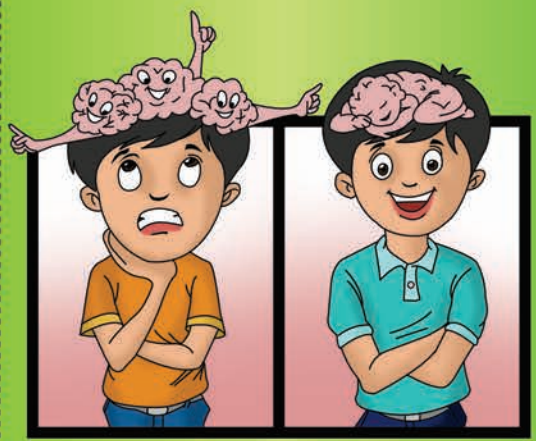

प्लस-माइनस

बैल को चलना नहीं होता तो उसका मालिक पीछे से उसे मारता है, इसलिए उसे ज़बरदस्ती चलना पड़ता है। गूँगा प्राणी किससे फरियाद करे? अब उसे ऐसे मार खाने की बारी क्यों आई? क्योंकि पहले बहुत फरियादें की थीं उसका यह परिणाम आया है। जब सत्ता थी तब फरियाद करते रहते थे। अब सत्ता नहीं है इसलिए बिना फरियाद रहना पड़ता है। कुदरत सब प्लस-माइनस कर देती है। इससे अच्छा फरियाद ही न करें तो क्या गलत है?

गोट नं - ३

"कम ऑन किड्स! वी डोंट वोन्ट टु बी लेट फॉर द..."

"मोस्ट अमेज़िंग शो इन द वर्ल्ड।" सुहाना ने प्रिया दीदी का वाक्य कम्प्लीट किया। और वैन की पीछे की सीट पर बैठ गई।

पाँच मिनिट में तो मित, शिवानी और शुभ भी अपने बेग-पैक के साथ वैन में बैठ गए। बच्चों ने पूरा साल फेन्टसी-लेन्ड थीम पार्क में जाने का इंतजार किया था।

"समर वेकेशन में तुम्हारे कज़िन को लेकर हम ज़रूर जाएँगे," मम्मी ने बच्चों को प्रोमिस दिया था। आज, वह दिन आ गया था। सभी बच्चों का एक्साइटमेन्ट लेवल टॉप पर था।

सभी, सिवाय एक के। विक्की को वैन तक लाने में तो प्रिया दीदी का पसीना छूट गया।

"इतनी जल्दी जाने का किसने तय किया था? सच ए स्टूपिड आईडिया इट इज़। और आज दूध कितना ठंडा था। और मेरे दूध में तो बॉर्नविटा भी नहीं था।" गाड़ी में बैठने के बाद भी विक्की का बड़बड़ाना चालू ही था।

"विक्की प्लीज, तेरी कम्प्लेन सुनने में किसी को इन्ट्रेस्ट नहीं है। तुम्हारा मूड अच्छा नहीं है, इसलिए सभी का मूड बिगाड़ने की ज़रूरत नहीं है।" मम्मी ने विक्की से कड़क शब्दों में कहा।

मम्मी के टोकने से विक्की को और भी ज्यादा गुस्सा आ गया। वह मुँह फुलाकर बैठ गया।

गाड़ी के चलते ही, सुहाना, मीत, शिवानी और शुभ ने आई-पेड पर खेलना शुरू कर दिया। थोड़ी देर हुई कि विक्की बोला, "इट्स सो हॉट! डैडी ए. सी. का टेम्प्रेचर थोड़ा लॉ करिए न।"

विक्की की फरियादों की हवा धीरे-धीरे उसके कज़िन को भी लग गई।

"ओह नो, आई-पेड की बेटरी खत्म हो गई। शुभ, मैंने तुमसे कहा था न कि आई-पेड चार्ज करके रखना। क्यों नहीं किया? सो इरिस्पॉन्सिबल।" सुहाना चिढ़ गई।

"ओह रियली!! तो तुमने क्यों नहीं किया, मिस परफेक्ट।" शुभ ने सुहाना की नकल उतारी।

प्रिया दीदी ने सुहाना को मीठी नज़र से देखा। सुहाना

को थोड़ी शर्मिंदगी लगी।

"ओह वेल। आपका कॉन्वर्सेशन सुनकर, नाना जी की कही हुई एक बात याद आ गई। यू नो, उनकी वह बात मुझे इतनी अधिक टच कर गई कि मैं कभी नहीं भूलूँगी।" प्रिया दीदी ने थोड़ी सी उत्कंठा जगाने की कोशिश की।

"कौन सी बात दीदी?" सुहाना ने तुरंत पूछा।

"नाना जी ने अपनी लाइफ में सिर्फ एक ही बार फरियाद की थी जब उनके पास चप्पल नहीं थी और चप्पल खरीदने के लिए पैसे भी नहीं थे। उस दिन नाना जी ने एक ऐसे व्यक्ति को देखा। जिसके पैर नहीं थे फिर भी बेहद खुश था। उस दिन के बाद, नाना जी ने कभी भी फरियाद नहीं की," प्रिया दीदी ने कुछ पल रुककर सुहाना के चेहरे के हाव-भाव देखे। सुहाना को दीदी की बात छू गई।"

"सुहाना, आई-पेड की बेटरी खत्म हो गई तो क्या हुआ? चलो, हम कोई दूसरा खेल खेलते हैं। लेट्स प्ले एटलस। रेडी एवरीबडी?" प्रिया दीदी की आवाज़ में उत्साह था।

"सच ए बोरिंग गेम, मुझे नहीं खेलना," कोई विक्की से पूछे उससे पहले ही विक्की ने अपना फैसला सुना दिया। प्रिया दीदी ने विक्की की ओर ध्यान नहीं दिया।

प्रिया दीदी : ओ. के... आई विल स्टार्ट फ्रॉम "ए"- अलास्का, सुहाना, तुम्हें "अ"

सुहाना : अलाहाबाद। शुभ तुम्हें "डी"

शुभ : डेनमार्क। मीत, तुम्हें "के"...

सभी को एटलस गेम खेलने का मज़ा आ रहा था। एक गेम खत्म हुई और दूसरी शुरू हुई। देखते-ही देखते फेन्टसी लेन्ड आ गया। फेन्टसी लेन्ड की विशालता और सुंदरता देखकर बच्चे आश्चर्यचकित हो गए और थोड़ी देर तक तो वे उसे देखते ही रहे।

"ओ.के... ओ.के. लेट्स नोट वेस्ट टाइम। पहले किस राइड में जाना है?" शिवानी ने सभी को हिलाकर पूछा।

विक्की के भाई-बहन एक राइड में से दूसरी राइड दौड़कर जा रहे थे, तब विक्की मानो कि ज़बरन चल रहा था। राइड्स के पास पहुँचकर भी उसकी फरियादों का लीकेज चालू ही था।

"कितनी लंबी लाइन है?" "यह पार्क कितना बड़ा है, चलते-चलते थक गया।" "आज कितनी गर्मी है..." आदि, आदि...

बहुत चलने के बाद जब एक रोलर कोस्ट राइड के पास पहुँचे, तभी वह राइड रिपेर के लिए बंद हो गई। विक्की का दिमाग़ सरक गया। "यह क्या? हम आए तभी बंद हो गई। नोनसेन्स।"

प्रिया दीदी ने इशारा करके सभी को दूसरी राइड में जाने के लिए कहा।

"विक्की, लेट्स टेक अ ब्रेक फ्रॉम दिस राइड्स।" कहकर दीदी विक्की को एक बेंच पर ले गए।

विक्की को बिठाकर, दोनों के लिए मजेदार आइस्क्रीम ले आए। एक कप विक्की को दिया और अपना कप लेकर, वह उसके पास बैठ गई।

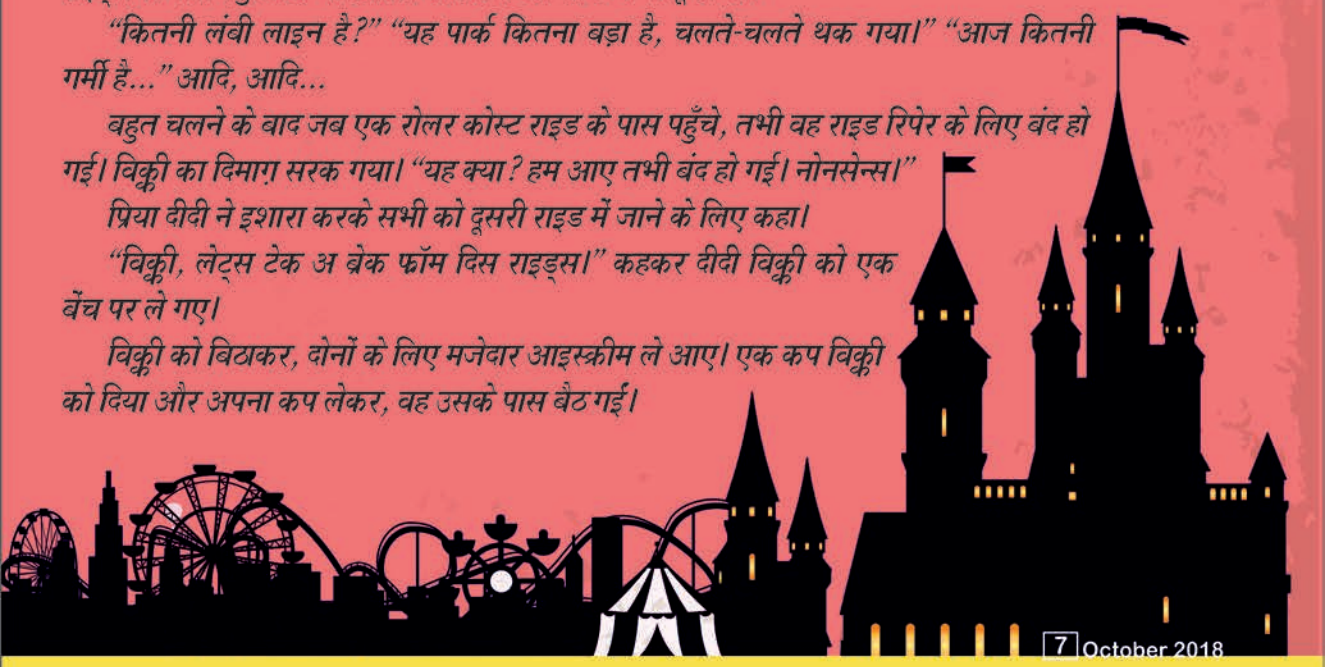

"विक्की जानते हो, तुम इतने सेड क्यों रहते हो? बिकोज यु आर ऑलवेज लुकिंग फॉर द गोट नंबर - ३, "कहकर, प्रिया दीदी ने आइस्क्रीम का एक बाईट लिया।

व्होट व्होट इज़ गोट नंबर - ३?" विक्की के चेहरे के हाव-भाव इतने विचित्र थे, जितनी उसे बात विचित्र लगी थी।

"वेल गोट नंबर - ३ की बात बहुत इन्ट्रेस्टिंग है। एक रविवार की दोपहर थी। तुम्हारी उम्र के दो बच्चे बोर हो रहे थे। उन्हें एक क्रेजी आइडिया सूझा। नज़दीक के एक फार्म में से वे तीन गोट्स (बकरियाँ) ले आए। और उनके ऊपर नंबर पेइन्ट किया। गोट नंबर १, २ और ४। इन तीन गोट्स को वे अपनी स्कूल बिल्डिंग में छोड़ आए। सोमवार की सुबह जब सभी स्कूल में आए, तब दुर्गंध से सभी का सिर फटने लगा। पता लगाने पर बिल्डिंग में से तीन गोट मिलीं। वेल, गोट १, २ और ४ तो मिल गई थी। लेकिन, गोट नंबर तीन का कहीं पता नहीं था। सभी परेशान हो गए।" "व्हेर इज़ गोट - ३" बस दिनभर व्याकुल होकर, सभी गोट नंबर थ्री को ढूँढते रहे लेकिन वह कहीं नहीं मिली। क्योंकि गोट नंबर - ३ तो थी ही नहीं न!

विक्की, अपने पास इतना सब होते हुए भी, हम किसी गोट नंबर तीन को ढूँढने में लगे रहते हैं और असंतोष का अनुभव करते हैं। किसी चीज़ की अनुपस्थिति, इतनी सभी चीज़ों की उपस्थिति से भी ज्यादा महत्वपूर्ण हो जाती है। जो नहीं है उसकी फरियाद करने में हम इतने दुःखी हो जाते हैं कि जो हमारे पास है उसका आनंद नहीं उठा पाते। सुखी होने के लिए हम फरियाद करते हैं और वही फरियाद हमें दुःख देती है।

तभी जायन्ट-व्हील की राइड से शिवानी की तेज़ आवाज़ सुनाई दी। "हाय दीदी, हाय विक्की।"

प्रिया दीदी ने शिवानी के सामने हाथ हिलाकर "हाय" कहा।

फिर विक्की को प्रेम से देखकर बोले, "तुम्हारे कज़िन्स कितने खुश हैं। आज आप सभी को एक ही प्रकार के संयोग मिले हैं। उन संयोगों में, उन लोगों ने कोई भी फरियाद किए बिना खुश रहना पसंद किया। क्या तुम्हें भी उनकी तरह हैपी नहीं रहना?"

विक्की को अचानक एहसास हुआ कि फरियादें करके उसने खुश रहने का सुनहरा समय गवाँ दिया था। और ज्यादा देर किए बिना वह सीधा खड़ा होकर बोला, "दीदी मैं जायन्ट व्हील राइड में जा रहा हूँ।"

सारे दिन मोज़ मस्ती करने के बाद, जब रात को घर पहुँचे तब सभी थककर चूर हो गए थे। लिफ्ट का बटन दबाया तब याद आया कि लिफ्ट बिगड़ गई है।

मम्मी का हाथ अपने कंधे पर रखकर, विक्की बोला, "नो प्रॉब्लम मम्मी, सीडी की राइड लेंगे तो थोड़ी और एक्सरसाइज हो जाएगी।"

सभी हँस पड़े और सीढ़ियाँ चढ़कर घर पहुँचे।

विशाल दृष्टि

मिस जिराफ के क्लास में विद्यार्थियों की लगातार फरियादें चलती ही रहतीं।

जानते हो मित्रों, रेगिस्तान में हमें महीनों तक खाना-पीना नहीं मिलता। इसलिए जब खाना मिलता है, तब हम ठीक से खा लेते हैं, और इस हम्प में स्टोर करके रख लेते हैं।
एक हफ्ते तक हम बिना पानी के भी रह सकते हैं। हमें जब पानी मिलता है, तब हम एक साथ ४६ लीटर पी लेते हैं।
हैं ???
हाँ, हम फरियाद किए बिना तो तुम यह बताओ कि मम्मी तुम्हें टिफिन में जो खाना देती हैं वह आपको खा लेना चाहिए या नहीं?
हम्म...
और एन्टार्क्टिका में सर्दियों में वहाँ का तापमान करीब -२० से - ८० डिग्री जितना हो जाता है।
सुनते ही खरगोश को कंपकंपी आ गई।
ऐसी अतिशय ठंडी में हज़ारों पेंगविन एक झुंड में खड़े हो जाते हैं जिससे सब को ठंडी की असर कम लगती है। धीरे-धीरे सभी अपनी जगह बदलकर झुंड के बीच में जाने की बारी लेते हैं।
बोलो खरगोश भाई, यदि कोई पेंगविन दम घुटने की फरियाद करके झुंड से अलग हो जाए तो क्या वह जीवित रह सकता है?

खरगोश कुछ जवाब दे, तभी उसे रीछ का थोड़ा सा धक्का लगा।

मोटे क्या कर रहा है। सीधे बैठ न! यहाँ मैं कहाँ फँस गया हूँ।

खरगोश का फरियाद करना तो चालू ही था।

चलो, हम एक प्रयोग करते हैं। बंदर भाई, मेरा एक काम करोगे? थोड़ा नमक और एक ग्लास पानी ले आओगे?

बंदर तो कूदता-कूदता पानी ले आया।

खरगोश भाई, यहाँ आओगे? इतना नमक, इस पानी के ग्लास में डालकर पीओ और हमें बताओ कि कैसा स्वाद आ रहा है?

छी... कितना खारा लग रहा है।

मिस्टर कैमल थोड़ा सा मुस्कूराकर सभी को बाहर तालाब के पास ले गए।

अब उतना ही नमक इस तालाब के पानी में डालो और फिर हमें पानी का स्वाद बताओ।

पानी तो एकदम फ्रेश और मीठा लग रहा है।

फ्रेन्डस्, जीवन में दुःख यह नमक जैसा है। दुःख का प्रमाण तो एक जैसा ही रहता है, लेकिन उसका स्वाद उसे जिस पात्र में डालते हैं उसके अनुसार आता है।

यदि हम ग्लास बनकर, लघु दृष्टि रखेंगे और दुःख की फरियाद करेंगे तो कड़वाहट लगेगी। लेकिन यदि तालाब बनकर, विशाल दृष्टि रखेंगे तो दुःख की कड़वाहट नहीं रहेगी।

लघु दृष्टि? विशाल दृष्टि? अर्थात् क्या?

लघु दृष्टि होती है तब थोड़ा सा सुख प्राप्त करने के लिए हम अपने फ्रेन्ड को दुःख दे देते हैं और फरियाद करके खुद भी दुःखी होते हैं।

लेकिन यदि विशाल दृष्टि हो तो दूर तक का सोचकर और एडजस्टमेन्ट लेकर, फ्रेन्डशिप टिकाकर रखते हैं। किसी को दुःख नहीं देते और खुद भी सुखी रहते हैं।

अब, खरगोश भाई को मिस्टर कैमल की बात समझ में आ गई। वह धम्म से रीछ की गोद में जाकर बैठ गया और प्रेम से कहा,

अब, तो जगह की कोई फाईट ही नहीं रही न दोस्त।

चलो खेले...

दोस्तों, रोनिल की गाड़ी ढूँढकर उसे बाहर निकालने में मदद कीजिए।

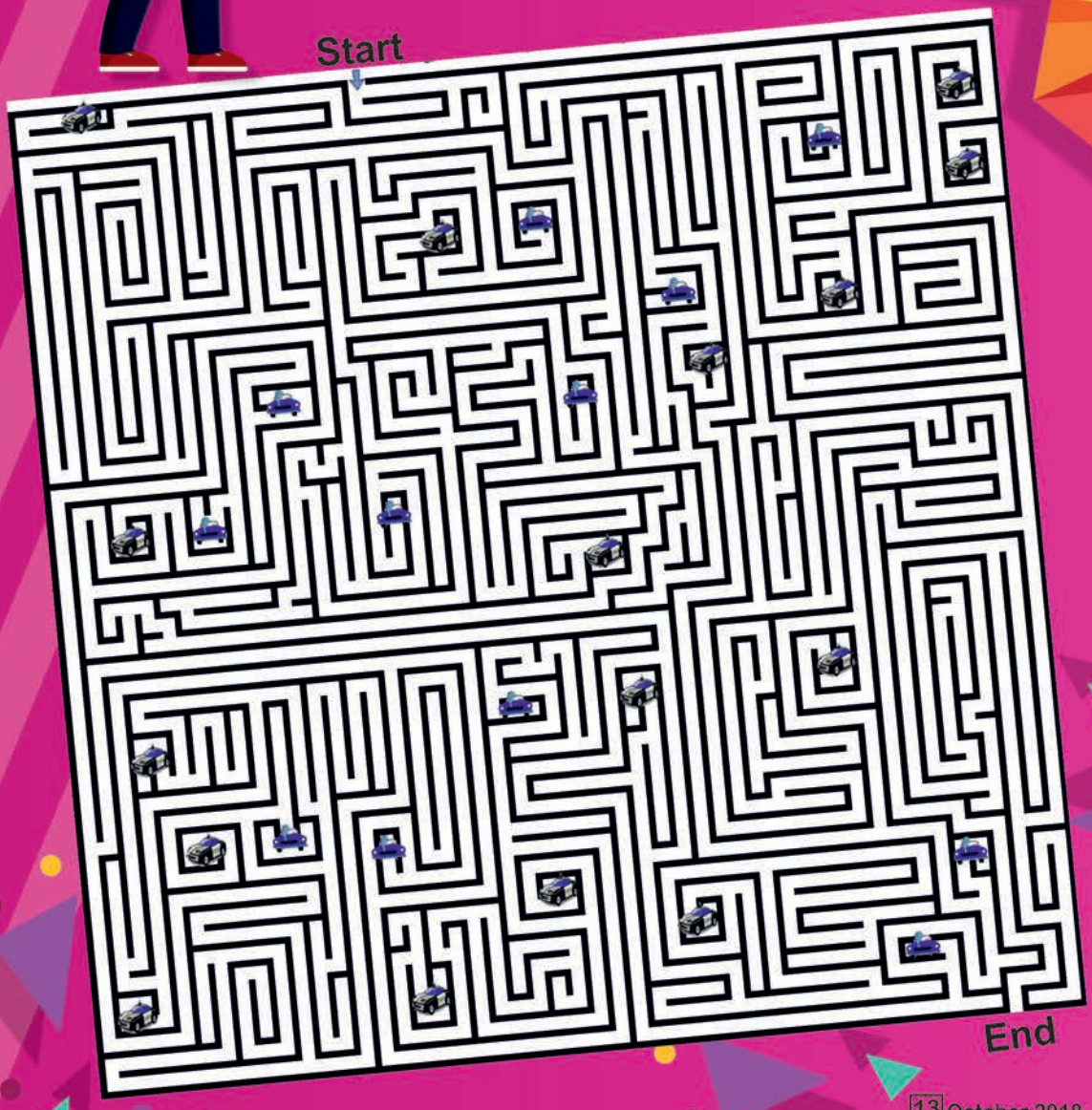

Srikanth bolla

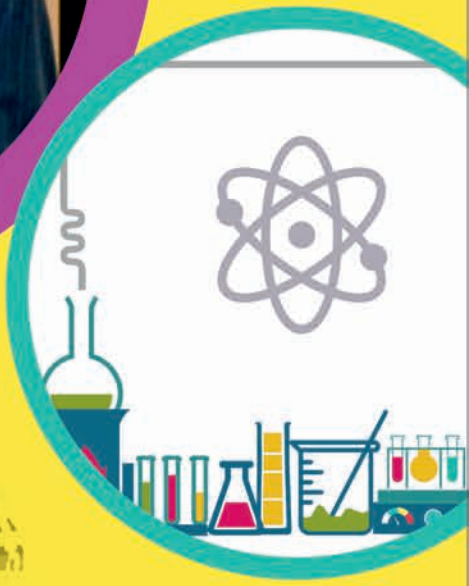

जीवंत उदाहरण

जब उस बच्चे का जन्म हुआ तब लोगों ने उसके माता-पिता से तरह-तरह के कटु वचन कहे। माता-पिता के लिए बच्चे का लालन-पालन कितना कठिन हो जाएगा उसका एहसास करवाने में लोगों ने कोई कसर ही नहीं रखी। लेकिन बच्चे के माता-पिता ने लोगों की बातों की परवाह किए बिना बहुत ही प्रेम से बच्चे का लालन-पालन किया।

आज, २५ साल के बाद वह युवक दुनिया के सामने एक प्रेरणा रूप उदाहरण बन गया है। जन्म से ही अंध श्रीकांत बोला आज ५० करोड़ की बोलंट इन्डस्ट्रीज़ के सी. ई. ओ. हैं जिसमें काम करने वाले ५० प्रतिशत कर्मचारी अपाहिज हैं।

श्रीकांत का जन्म एक गरीब परिवार में हुआ था। उनके माता-पिता चावल की खेती करते थे। जब श्रीकांत ने गाँव की पाठशाला में प्रवेश लिया तब अंधे होने की वजह से उनकी भयंकर अवहेलना होती थी। शिक्षकों और विद्यार्थियों के ऐसे आचरण से दुःखी होकर माता-पिता ने श्रीकांत का एडमिशन ब्लाइन्ड स्कूल में करवा दिया।

घर से मीलों दूर ब्लाइन्ड स्कूल में पड़ने वाली मुश्किलों की परवाह किए बिना, श्रीकांत ने उत्साहपूर्वक पढ़ाई शुरू कर दी। श्रीकांत के सभी विषयों में अच्छे मार्क्स आने लगे। स्पेशल स्कूल में प्रोत्साहन मिलने पर, वे चैस और क्रिकेट में भी चैम्पियन बने।

लीड इन्डिया प्रोजेक्ट में उन्हें भूतपूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम के साथ काम करने का मौका भी मिला। बोर्ड की परीक्षा में श्रीकांत को ९० प्रतिशत मिले। लेकिन अंधे होने की वजह से उन्हें साइन्स स्ट्रीम में एडमिशन नहीं दिया गया। कई अर्जियाँ करने के बाद सरकार ने श्रीकांत का एडमिशन साइन्स स्ट्रीम में मंजूर किया। श्रीकांत ने अपनी क्षमता साबित की। सभी पाठ्य पुस्तकों की ऑडियो बुक बनाकर उन्होंने सख्त मेहनत की और बारहवीं कक्षा में ९८ प्रतिशत प्राप्त किए।

श्रीकांत का संघर्ष अभी खत्म नहीं हुआ था। अंध होने की वजह से उन्हें आई. आई. टी. की कम्पेटिटिव परीक्षा देने के लिए मना कर दिया गया। लेकिन श्रीकांत कसौटियों से हार मानने वालों में से नहीं थे। वे कहते हैं कि "एक दरवाज़ा बंद होता है तो दूसरा खुल जाता है। अपनी ज़िंदगी में मैंने यह अनुभव किया है।"

श्रीकांत ने अमरीका की इंजीनियरिंग कॉलेज में एप्लिकेशन भेजी और वहाँ की चार टॉप इन्स्टिटयूट में उन्हें प्रवेश मिल गया। श्रीकांत ने एम. आई. टी. में जाना पसंद किया।

इस तरह श्रीकांत बोला विश्व प्रसिद्ध एम. आई. टी. (मेसेच्युएट इन्स्टिटयूट ऑफ टेक्नॉलोजी) के पहले अंध विद्यार्थी बने। वहाँ से ग्रेज्युएट होने के बाद अमेरीकन कॉर्पोरेट वर्ल्ड में जाने का चान्स होने के बावजूद वे वापस भारत लौट आए। उन्होंने तय किया कि वे अपना व्यवसाय शुरू करके, अन्य विकलांगों को भी अपने पैरों पर खड़े होने के लिए मदद रूप बनेंगे।

भारत वापस लौटकर श्रीकांत ने ईको फ्रेन्डली पैकेजिंग और घरेलू ज़रूरत की चीजें बनाने का कारखाना शुरू किया। आज तीन राज्यों में श्रीकांत द्वारा स्थापित इन्डस्ट्रीज़ के नौ प्लान्टस् हैं।

अब तक श्रीकांत ने करीब ३००० से ज्यादा विकलांगों का शिक्षण और व्यवसाय में सहायता की है। श्रीकांत की कंपनी में मंदबुद्धि, गूँगे, बहरे, अंध और अन्य प्रकार के विकलांग व्यक्ति भी काम करते हैं।

GNC पार्क

हेलो दोस्तों... आप सब को पता है अगले महीने क्या आ रहा है? हाँ, हमारे प्यारे "दादा भगवान" का 999 वाँ जन्मदिन!!! और तब हमें उन ग्यारह दिनों के दौरान एक नयी ही दुनिया देखने मिलेगी। देखने जैसी दुनिया!!! उसमें है Gnc पार्क। तो चलो, मैं आप सब को बाल दुनिया की एक सैर करवाता हूँ।

अद्‌भुत! I don't believe it!! एक ऐसी जगह जहाँ छोटे-बड़े, सब के लिए कुछ न कुछ है।

यह रोमांचक आउटडोर गेम्स् से भरपूर "फन-ओ-वेन्चरस" पार्क देखने का भूलना नहीं। है न?

और... दूसरा क्या है? युवाओं को भी रोमांचक लगे ऐसा कुछ है, आँखें खोल दें ऐसा सेक्शन।

"सेल्फी ली क्या?"

मोज़ - मज़ा, जलसा और आनंद

ओ... हो... babies अर्थात् ४ से ७ वर्ष के बच्चों के लिए खास ऐसा सेक्शन... आओ, मस्ती से भरपूर राइड को enjoy कीजिए ...

वाउ ! फन से भरपूर पपेट शो !!!

अरे वाह ! ८ से १२ वर्ष के बच्चों के लिए कुछ खास... बड़े होने की बहुत जल्दी है? आइए और जो बड़े लोग कर रहे हैं ऐसा कुछ करें...

इस मज़ेदार एनिमेटेड मूवी में टेरीफिक टेरी से मिलते हैं...

आपका मनपसंद टेक्नोलॉजिकल फ्रेन्ड यानी कि मोबाइल फोन के बारे में थोड़ी ज्यादा जानकारी प्राप्त करें।

मिट सकती है ये दूरियाँ

नयी समझ देने वाले Activity based sessions भी हैं।

New LEARNING

उड़ान

ओह नो... एक अन्जानी जगह में फँस गए हो, तो उसमें से बाहर निकलने के लिए रास्ता कैसे ढूँढोगे?

आपके लिए एक खास दिन... GNC Day जो होगा २३-९-२०१८ (उस दिन यह) कुछ खास नयी प्रवृत्तियाँ लेकर आ रहा है...

फ्रेन्डस्.... यह चूकने जैसी नहीं है। "देखने जैसी दुनिया की" opening ceremony

और... भारत में पहली बार !! एक नया आंतरराष्ट्रीय परेड जिसमें अलग-अलग देशों की संस्कृति भव्य तरीके से देखने को मिलेगी।

और भी बहुत... बहुत... बहुत...

सारी Surprises

Fancy Goodies के लिए बाल विज्ञान स्टॉर में आइए... और "लकी डिप" में आपका किस्मत आजमाइए... और... आपको हर एक प्रकार का अच्छा लगे ऐसा टेस्टी फूड भी मिलेगा... विदेशी भी!!!

एम्फी थियेटर में लाइव डान्स और ड्रामा करो और उसके साथ-साथ नये friends बनाओ।

एम्फी थियेटर

... और उसी दिन पूज्य दीपक भाई के साथ स्पेशल सत्संग और उसके बाद Night Event का आनंद लीजिए।

आंतरराष्ट्रीय डॉम में दुनिया के अलग-अलग भागों में तीनों ज्ञानियों ने किए हुए सत्संग प्रवास की झलक...

जो आपको दुनिया भूला देगा... और आपके friends को भी यह अक्रम एक्सप्रेस भेट देकर invite कीजिए।

Akram Express
October 2018
Year : 6, Issue : 7
Conti. Issue No.: 67

BALVIGNAN
Fun 'n' Gyan with Dada

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/17-19
valid up To 31-12-2019
LPWP Licence No. PMG/HQ/081/2018
valid up to 31-12-2019
Posted at Adalaj Post Office
on 08th of every month

Dear Friend,

I Invite You

To see a World Worth Exploring

Where fun and frolic happens
every minute
come visit to see it...
Janma Jayanti Celebration
From : 15th to 25th Nov 2018

**At : Trimandir, Simandhar City,
Ahmedabad-Kalol Highway, Dist
Gandhinagar Gujarat -382421
http://jjd.dadabhagwan.org/**

Don't Miss!

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए खास जानकारी कि अगले महीने से कुछ कारणों से हिन्दी अक्रम एक्सप्रेस पब्लिश करना बंद कर रहे हैं। अब से हिन्दी अक्रम एक्सप्रेस **Akonnect app** *या* **Kids Website** *की नीचे दी गई लींक से डाउनलोड करके पढ़ सकेंगे।*

https://kids.dadabhagwan.org/knowledgehouse/magazines/Hindi/All+Years/All+Months/

अभी जो हिन्दी अक्रम एक्सप्रेस केऐक्टिव मेम्बर हैं, उन्होंने मेम्बरशिप रजिस्टर करने केदौरान जो रकमदी थी, वह पूरी रकम उनको मनी ऑर्डर द्वारा वापस भेज दी जाएगी।

Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Printed at Amba offset :- B-99 GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025